C.B.S.E

कक्षा : 9

हिंदी (ब)

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश :

1) **इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।**
2) **चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।**
3) **यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।**

खंड - क

प्र. 1. (अ) निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (2×4) (1×1)=9

प्रतिभा किसी की मोहताज नहीं होती। इसके आगे समस्याएँ बौनी हैं। लेकिन समस्या एक प्रतिभा को ख़ुद दूसरी प्रतिभा से होती है। बहुमुखी प्रतिभा का होना, अपने भीतर एक प्रतिभा के बजाय दूसरी प्रतिभा को खड़ा करना है। इससे हमारा नुकसान होता है। कितना और कैसे?

मन की दुनिया की एक विशेषज्ञ कहती हैं कि बहुमुखी होना आसान है, बजाय एक ख़ास विषय के विशेषज्ञ होने की तुलना में। बहुमुखी लोग स्पर्धा होने से घबराते हैं। कई विषयों पर उनकी पकड़ इसलिए होती है कि वे एक में स्पर्धा होने पर दूसरे की ओर भागते हैं। बहुमुखी लोगों में सबसे महान् माने जाने वाले माइकल एंजेलो से लेकर अपने यहाँ रवींद्रनाथ टैगोर जैसे कई लोग। लेकिन आज ऐसे लोगों की पूछ-परख कम होती है। ऐसे लोग प्रतिभाशाली आज भी माने जाते हैं, लेकिन असफल होने की आशंका उनके लिए अधिक होती है। आज वे लोग 'विंची सिंड्रोम' से पीड़ित माने जाते हैं, जिनकी पकड़ दो-तीन या इससे ज़्यादा क्षेत्रों में हो, लेकिन हर क्षेत्र में उनसे बेहतर उम्मीद्वार मौजूद हों।

बहुमुखी प्रतिभा वाले लोगों के भीतर कई कामों को साकार करने की इच्छा बहुत तीव्र होती है। उनकी उत्सुकता उन्हें एक दूसरे क्षेत्र में हाथ

आज़माने को बाध्य करती है। समस्या तब होती है, जब यह हाथ आज़माना दख़ल करने जैसा हो जाता है। वे न इधर के रह जाते हैं, और न उधर के। प्रबंधन की दुनिया में - 'एक के साधे सब सधे, सब साधे सब जाए' का मंत्र ही शुरू से प्रभावी है। यहाँ उस पर ज़्यादा फोकस नहीं किया जाता, जो सारे अंडे एक टोकरी में न रखने की बात करता है। हम दूसरे क्षेत्रों में हाथ आज़मा सकते हैं, पर एक क्षेत्र के महारथी होने में ब्रेकर की भूमिका न अदा करें।

1. बहुमुखी प्रतिभा क्या है? प्रतिभा से समस्या कब, कैसे हो जाती है?
2. बहुमुखी प्रतिभा वालों की किन कमियों की ओर संकेत है?
3. बहुमुखी प्रतिभागियों की पकड़ किन क्षेत्रों में होती है और उनकी असफलता की संभावना क्यों है?
4. ऐसे लोगों का स्वभाव कैसा होता है और वे प्राय: सफल क्यों नहीं हो पाते?
5. आशय स्पष्ट कीजिए - "प्रतिभा किसी की मोहताज नहीं होती।"

प्र. 1. (ब) निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर चुनकर लिखिए : 2x3=6

कहो, तुम्हारी जन्मभूमि का है कितना विस्तार?
भिन्न-भिन्न यदि देश हमारे तो किसका संसार
धरती को हम काटें छाटें,
तो उस अम्बर को भी बाँटें,
एक अनल है, एक सलिल है, एक अनल संचार,
कहो, तुम्हारी जन्मभूमि का है कितना विस्तार?
एक भूमि है, एक व्योम है
एक सूर्य है, एक सोम है
एक प्रकृति है, एक पुरुष है, अगणित रूपाकार,
कहो, तुम्हारी जन्मभूमि का है कितना विस्तार?

1. जन्मभूमि के विस्तार से कवि का क्या आशय है?

2. देशों की भिन्नता को महत्त्व क्यों नहीं दिया जा सकता?

3. एक प्रकृति है, एक पुरुष है, अगणित रूपाकार से क्या आशय है?

खंड - 'ख'

प्र. 2. निम्नलिखित शब्दों का वर्ण विच्छेद कीजिए : 2

- अर्जुन
- ढक्कन

प्र. 3. क) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थानों पर चंद्रबिंदु का प्रयोग कीजिए : 3

- मुह
- हसना

ख) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थानों पर नुक्ते का प्रयोग कीजिए :

- फैजल
- फौरन

ग) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थानों पर बिंदु का प्रयोग कीजिए :

- बन्दर
- रनक

प्र. 4. क) निम्नलिखित शब्दों में उचित प्रत्यय पहचानिए : 3

- भूखा
- दिल्लीवाला

ख) उचित उपसर्ग पहचानिए :

- औगुन
- संवाद

ग) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और प्रत्यय को अलग कीजिए :

- योगी
- दौड़ना

प्र. 5. क) निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम चिह्न का प्रयोग करें। 3

1. वह क्या लिख रहा है
2. हाय अंडे तो टूट गए
3. धर्मराज युधिष्ठिर सत्य और धर्म के संरक्षक थे

ख) निम्नलिखित शब्दों के सही संधि-विच्छेद कीजिए : 4

- सर्वेक्षण
- अभ्यागत
- मुनीश
- महौज

खंड 'ग'

प्र. 6. (अ) निम्नलिखित प्रश्नों उत्तर लिखिए : (2+2+1)=5

1. लेखक की दृष्टि में धर्म की भावना कैसी होनी चाहिए?
2. गाँधीजी से मिलने आनेवालों के लिए महादेव भाई क्या करते थे?
3. अतिथि सदैव देवता नहीं होता,वह मानव और थोड़े अंशों में राक्षस भी हो सकता है द्वारा लेखक क्या कहना चाहते हैं?

प्र. 6. (ब) सूखे हुए कीचड़ का सौंदर्य किन स्थानों पर दिखाई देता है? 5

प्र. 7. (अ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (2+2+1)=5

1. जहाँ अगरबत्तियाँ बनती है, वहाँ का माहौल कैसा होता है?
2. कवि एक घर पीछे या दो घर आगे क्यों चल देता है?
3. दूसरे पद में कवि ने 'गरीब निवाजु' किसे कहा है? स्पष्ट कीजिए।

प्र. 7. (ब) निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए : 5

1. दीरघ दोहा अरथ के, आखर थोरे आहिं। - इन पक्तियों द्वारा कवि क्या समझाने का प्रयास कर रहा है?

प्र. 8. तक्षशिला में आगजनी की खबर पढ़कर लेखक के मन में कौन-सा विचार कौंधा? इससे लेखक के स्वभाव की किस विशेषता का परिचय मिलता है? 5

खंड - 'घ'

प्र. 9. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिए। 5

- यदि में स्वास्थ्य मंत्री होता
- भाग्य और पुरुषार्थ

प्र. 10. नेशनल बुक ट्रस्ट के प्रबंधक को पत्र लिखकर हिन्दी में प्रकाशित नवीनतम साहित्य की पुस्तकें भेजने हेतु अनुरोध कीजिए। 5

प्र. 11. दिए गए चित्र का वर्णन करें : 5

प्र. 12. विद्यार्थी और बस कंडक्टर के बीच हो रहे संवाद लिखिए। 5

प्र. 13. कंप्यूटर के विज्ञापन का प्रारुप (नमूना) तैयार कीजिए : 5

C.B.S.E

कक्षा : 9

हिंदी (ब)

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश :

1) इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।

2) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

3) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खंड - क

प्र. 1. (अ) निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (2×4) (1×1)=9

प्रतिभा किसी की मोहताज नहीं होती। इसके आगे समस्याएँ बौनी हैं। लेकिन समस्या एक प्रतिभा को ख़ुद दूसरी प्रतिभा से होती है। बहुमुखी प्रतिभा का होना, अपने भीतर एक प्रतिभा के बजाय दूसरी प्रतिभा को खड़ा करना है। इससे हमारा नुकसान होता है। कितना और कैसे?

मन की दुनिया की एक विशेषज्ञ कहती हैं कि बहुमुखी होना आसान है, बजाय एक ख़ास विषय के विशेषज्ञ होने की तुलना में। बहुमुखी लोग स्पर्धा होने से घबराते हैं। कई विषयों पर उनकी पकड़ इसलिए होती है कि वे एक में स्पर्धा होने पर दूसरे की ओर भागते हैं। बहुमुखी लोगों में सबसे महान् माने जाने वाले माइकल एंजेलो से लेकर अपने यहाँ रवींद्रनाथ टैगोर जैसे कई लोग। लेकिन आज ऐसे लोगों की पूछ-परख कम होती है। ऐसे लोग प्रतिभाशाली आज भी माने जाते हैं, लेकिन असफल होने की आशंका उनके लिए अधिक होती है। आज वे लोग 'विंची सिंड्रोम' से पीड़ित माने जाते हैं, जिनकी पकड़ दो-तीन या इससे ज़्यादा क्षेत्रों में हो, लेकिन हर क्षेत्र में उनसे बेहतर उम्मीद्वार मौजूद हों।

बहुमुखी प्रतिभा वाले लोगों के भीतर कई कामों को साकार करने की इच्छा बहुत तीव्र होती है। उनकी उत्सुकता उन्हें एक दूसरे क्षेत्र में हाथ

आज़माने को बाध्य करती है। समस्या तब होती है, जब यह हाथ आज़माना दख़ल करने जैसा हो जाता है। वे न इधर के रह जाते हैं, और न उधर के। प्रबंधन की दुनिया में - 'एक के साधे सब सधे, सब साधे सब जाए' का मंत्र ही शुरू से प्रभावी है। यहाँ उस पर ज़्यादा फोकस नहीं किया जाता, जो सारे अंडे एक टोकरी में न रखने की बात करता है। हम दूसरे क्षेत्रों में हाथ आज़मा सकते हैं, पर एक क्षेत्र के महारथी होने में ब्रेकर की भूमिका न अदा करें।

1. बहुमुखी प्रतिभा क्या है? प्रतिभा से समस्या कब, कैसे हो जाती है?

   उत्तर : एक ही व्यक्ति में अनेक गुणों का होना बहुमुखी प्रतिभा कहलाती है। बहुमुखी प्रतिभा वालों को कई कामों को पूरा करने की इच्छा होती है और यही उनकी समस्या भी बन जाती है क्योंकि कभी-कभी एक दूसरे क्षेत्र में हाथ आजमाना दूसरे के काम में दखल देना जैसा हो जाता है।

2. बहुमुखी प्रतिभा वालों की किन कमियों की ओर संकेत है?

   उत्तर : बहुमुखी लोग स्पर्धा, असफलता और आलोचना से घबराते है।

3. बहुमुखी प्रतिभागियों की पकड़ किन क्षेत्रों में होती है और उनकी असफलता की संभावना क्यों है?

   उत्तर : बहुमुखी प्रतिभागियों की पकड़ कई क्षेत्रों में होती है। उनकी असफलता की संभावना इसलिए होती क्योंकि वे एक चीज पूरी होने से पहले ही दूसरी की ओर भागने लगते हैं।

4. ऐसे लोगों का स्वभाव कैसा होता है और वे प्राय: सफल क्यों नहीं हो पाते?

   उत्तर : बहुमुखी प्रतिभा वाले लोगों के भीतर कई कामों को साकार करने की इच्छा बहुत तीव्र होती है। उनकी उत्सुकता उन्हें

एक से दूसरे क्षेत्र में हाथ आज़माने को बाध्य करती है। वे एक चीज पूरी होने से पहले ही दूसरी की ओर भागने लगते हैं इसलिए वे प्रायः सफल नहीं होते।

5. आशय स्पष्ट कीजिए - "प्रतिभा किसी की मोहताज नहीं होती।"
   उत्तर : प्रस्तुत पंक्ति का आशय प्रतिभाशाली व्यक्तियों की राह में आने वाली अड़चनों से है।

प्र. 1. (ब) निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर चुनकर लिखिए : 2x3=6

कहो, तुम्हारी जन्मभूमि का है कितना विस्तार?
भिन्न-भिन्न यदि देश हमारे तो किसका संसार
धरती को हम काटें छाटें,
तो उस अम्बर को भी बाँटें,
एक अनल है, एक सलिल है, एक अनल संचार,
कहो, तुम्हारी जन्मभूमि का है कितना विस्तार?
एक भूमि है, एक व्योम है
एक सूर्य है, एक सोम है
एक प्रकृति है, एक पुरुष है, अगणित रूपाकार,
कहो, तुम्हारी जन्मभूमि का है कितना विस्तार?

1. जन्मभूमि के विस्तार से कवि का क्या आशय है?
   उत्तर : जन्मभूमि के विस्तार से कवि का आशय बँटवारे से है। कवि कहते हैं कि मनुष्य ने अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए धरती को विभिन्न देशों में बाँट दिया है। कवि कहते हैं की जन्मभूमि के नाम पर हम धरती को कितने भागों में और कितना विस्तार करते जाएँगे।

2. देशों की भिन्नता को महत्त्व क्यों नहीं दिया जा सकता?

उत्तर : कवि के अनुसार ईश्वर ने धरती, वायु, जल, आकाश को बनाते समय नहीं बाँटा तो हम विस्तार के नाम पर इस भूमि को कैसे बाँट सकते हैं। इसलिए देश कि विभिन्नता को इतना अधिक महत्त्व दिए जाने की आवश्यकता नहीं है।

3. एक प्रकृति है, एक पुरुष है, अगणित रूपाकार से क्या आशय है?

उत्तर : उपर्युक्त पंक्ति का आशय मनुष्य की एक ही प्रकृति परंतु अलग-अलग रूप-गुणों से हैं।

खंड - 'ख'

प्र. 2. निम्नलिखित शब्दों का वर्ण विच्छेद कीजिए : 2

- अर्जुन = अ+र्+ज्+उ+न्+अ
- ढक्कन = ढ् + अ + क् + क् + अ + न् + अ

प्र. 3. क) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थानों पर चंद्रबिंदु का प्रयोग कीजिए : 3

- मुह - मुँह
- हसना - हँसना

ख) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थानों पर नुक्ते का प्रयोग कीजिए :

- फैजल - फ़ैज़ल
- फौरन - फ़ौरन

ग) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थानों पर बिंदु का प्रयोग कीजिए :

- बन्दर - बंदर
- रनक - रंक

प्र. 4. क) निम्नलिखित शब्दों में उचित प्रत्यय पहचानिए : 3

- भूखा - आ
- दिल्लीवाला - वाला

ख) उचित उपसर्ग पहचानिए :

- औगुन - औ
- संवाद - सम्

ग) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और प्रत्यय को अलग कीजिए :

- योगी - योग + ई
- दौड़ना - दौड़ + ना

प्र. 5. क) निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम चिह्न का प्रयोग करें। 3

1. वह क्या लिख रहा है

   उत्तर : वह क्या लिख रहा है?

2. हाय अंडे तो टूट गए

   उत्तर : हाय! अंडे तो टूट गए।

3. धर्मराज युधिष्ठिर सत्य और धर्म के संरक्षक थे

   उत्तर : धर्मराज (युधिष्ठिर) सत्य और धर्म के संरक्षक थे।

ख) निम्नलिखित शब्दों के सही संधि-विच्छेद कीजिए : 4

- सर्वेक्षण = सर्व + ईक्षण
- अभ्यागत = अभी + आगत
- मुनीश = मुनि + ईश
- महौज = महा + ओज

खंड 'ग'

प्र. 6. (अ) निम्नलिखित प्रश्नों उत्तर लिखिए : (2+2+1)=5

1. लेखक की दृष्टि में धर्म की भावना कैसी होनी चाहिए?

उत्तर : हमारा देश स्वाधीन है। इसमें अपने-अपने धर्म को अपने ढंग से मनाने की पूरी स्वतंत्रता है। उसके अनुसार शंख, घंटा बजाना, ज़ोर-ज़ोर से नमाज़ पढ़ना ही केवल धर्म नहीं है। शुद्ध आचरण और सदाचार धर्म के लक्षण हैं।

2. गाँधीजी से मिलने आनेवालों के लिए महादेव भाई क्या करते थे?

उत्तर : गाँधीजी से मिलने आनेवालों से महादेव जी खुद मिलते थे, उनकी समस्याएँ सुनते, उनकी संक्षिप्त टिप्पणी तैयार करते और गांधी के सामने पेश करते थे और इसके बाद वे आने वालों के साथ उनकी रूबरू मुलाकात करवाते थे।

3. अतिथि सदैव देवता नहीं होता,वह मानव और थोड़े अंशों में राक्षस भी हो सकता है द्वारा लेखक क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर : अतिथि जब आता है तो देवता जैसा प्रतीत होता है। अतिथि जब बहुत दिनों तक किसी के घर ठहर जाता है तो 'अतिथि देवो भव 'का मूल्य नगण्य हो जाता है। आने के एक दिन बाद वह सामान्य हो जाता है अर्थात् इतना बुरा भी नहीं लगता इसलिए इसे मानव रुप में कहा है और ज़्यादा दिन रह जाए तो राक्षस जैसा प्रतीत होता है अर्थात् बुरा लगने लगता है।

प्र. 6. (ब) सूखे हुए कीचड़ का सौंदर्य किन स्थानों पर दिखाई देता है? 5

उत्तर : सूखे हुए कीचड़ का सौंदर्य नदियों के किनारे दिखाई देता है। कीचड़ जब थोड़ा सूख जाता है तो उस पर छोटे-छोटे पक्षी बगुले आदि घूमने लगते हैं। कुछ अधिक सूखने पर गाय, भैंस, भेड़, बकरियाँ भी चलने-फिरने लगते हैं। कीचड़ सूखकर टुकड़ों

में बँट जाता है, उसमें दरार पड़ जाती है। इनका आकार टेढ़ा-मेढ़ा होने से सुखाए हुए खोपरों जैसे सुन्दर लगते है। ऐसा दृश्य लगता है कि यहाँ कोई युद्ध लड़ा गया हो। ये सारा दृश्य बहुत सुन्दर लगता है। कभी-कभी किनारे पर समतल और चिकना फैला कीचड़ भी सुन्दर लगता है।

प्र. 7. (अ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (2+2+1)=5

1. जहाँ अगरबत्तियाँ बनती है, वहाँ का माहौल कैसा होता है?

उत्तर : जहाँ अगरबत्तियाँ बनती है वहाँ का माहौल बड़ा ही गंदगी से भरा और प्रदूषित होता है। इनका घर कूड़े-कर्कट, बदबूदार, तंग और बदबू से भरे गंदे नालों के पास होता है। यहाँ इतनी बदबू होती है कि सिर फट जाता है। ऐसी विषम परिस्तिथियों में रहने के बाद भी ये दूसरों के जीवन में खुशबू बिखरने का काम करते हैं।

2. कवि एक घर पीछे या दो घर आगे क्यों चल देता है?

उत्तर : कवि ने अपने घर तक पहुँचने के लिए कुछ निशानियाँ बना रखीं थी जैसे - पीपल का पेड़, ढहा हुआ घर, ज़मीन का खाली टुकड़ा, बिना रंग वाले लोहे के फाटक वाला मकान आदि जो नित्य-प्रतिदिन होनेवाले बदलाव के कारण मिट गईं हैं इसलिए कवि एक घर पीछे या दो घर आगे अपने घर को ढूँढते हुए चल देता है।

3. दूसरे पद में कवि ने 'गरीब निवाजु' किसे कहा है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : दूसरे पद में 'गरीब निवाजु' ईश्वर को कहा गया है। ईश्वर को 'निवाजु ईश्वर' कहने का कारण यह है कि वे निम्न जाति के भक्तों को भी समभाव स्थान देते हैं, गरीबों का उद्धार करते हैं, उन्हें सम्मान दिलाते हैं, सबके कष्ट हरते हैं और भवसागर से पार उतारते हैं।

प्र. 7. (ब) निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए : 5

1. दीरघ दोहा अरथ के, आखर थोरे आहिं। - इन पक्तियों द्वारा कवि क्या समझाने का प्रयास कर रहा है?

उत्तर : इस पंक्ति का भाव यह है कि दोहे में अक्षर कम होने के बावजूद उसमें गूढ़ अर्थ छिपा रहता है। उनका गूढ़ अर्थ ही उनकी गागर में सागर भरने की प्रवृत्ति को स्पष्ट कर देता है। ठीक वैसे ही जैसे नट कुंडली को समेटकर कूदकर रस्सी पर चढ़ जाता है। कवि के कहने का तात्पर्य यह है कि हम जीवन में जो भी कार्य करें उसमें हमें सिद्धहस्त होना चाहिए।

प्र. 8. तक्षशिला में आगजनी की खबर पढ़कर लेखक के मन में कौन-सा विचार कौंधा? इससे लेखक के स्वभाव की किस विशेषता का परिचय मिलता है? 5

उत्तर : तक्षशिला में धर्म के नाम पर धार्मिक झगड़ें जन्म लेते रहते थे। जब लेखक इन झगड़ें की खबर पढ़ रहे थे तब लेखक को हामिद खाँ का ध्यान आया जहाँ लेखक ने खाना बड़े अपनेपन से खाया था। उसने सोचा भगवान करे हामिद खाँ सुरक्षित हो। इसके लिए लेखक ने प्रार्थना भी की। इससे लेखक के धार्मिक एकता की भावना का पता लगता है। उसमें हिंदू-मुसलमान में कोई फर्क नहीं। वह एक अच्छा इंसान है।

खंड - 'घ'

प्र. 9. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिए। 5

यदि में स्वास्थ्य मंत्री होता

यदि मैं अपने देश का स्वास्थ्य मंत्री होता तो अपने आपको, सचमुच बड़ा भाग्यशाली मानता, क्योंकि देश-सेवा का ऐसा सुनहरा अवसर और कोई हो ही नहीं सकता क्योंकि स्वस्थ लोगों से ही एक सबल राष्ट्र की कल्पना की जा सकती है।

बचपन से ही मेरे मन में स्वास्थ्य मंत्री बनने की इच्छा थी इसका कारण यह था कि मैं बचपन में जिस कस्बे में पला बढ़ा वहाँ पर प्राथमिक उपचार की भी सुविधा नहीं थी। इस कारण कई बार लोगों को जान से हाथ धोना पड़ा। खुद मेरे दादाजी को सही उपचार न मिलने के कारण उनकी मृत्यु मेरी ही आँखों के सामने हुई।

मैं अपने कार्यकाल के दौरान देश में आम नागरिकों को सस्ती और उचित स्वास्थ्य सेवाओं को पहुँचाने हेतु सरकारी अस्पताल का अधिक से अधिक निर्माण करता। जहाँ जनता को मुफ्त जाँच मुफ्त, इलाज, दवाईयाँ आदि मिलती। मैं जेनेरिक दुकानों में भी वृद्धि करता जिसके फलस्वरूप महँगी दवाई बेचने वालों पर मैं लगाम कस सकता। महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए संसद में एक अलग बजट पेश करता।

भारत वासियों के स्वास्थ्य सुधार के लिए ठोस कदम उठाता, गाँवों की स्वास्थ्य प्रगति के लिए पंचायतों को विशेष अधिकार देता, समाजसुधारकों और ग्राम सेवकों को भी प्रोत्साहित करता।

स्वास्थ्य मंत्री होने के नाते मैं प्रदूषण फैलाने वाली इकाइयों पर प्रतिबंध लगाता। पर्यावरणीय स्वच्छता के लिए प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगा देता और दूसरी और वृक्षारोपण और स्वच्छता अभियान को अधिक से अधिक बढ़ावा देने के लिए गाँव-गाँव और नगर-नगर नागरिक समितियों का गठन करता और पूरे देश को इसमें सह भागी करता। गंदगी करनेवालों, प्रदूषण फैलाने वाले, नियम और कानून तोड़ने वालों पर कड़ी कार्यवाही करता।

मैं स्वयं अपनी सेवा कर्तव्यनिष्ठा से एक आदर्श प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता। मैं विरोधी पक्षों के दृष्टीकोण को समझने की पूरी कोशिश करता और देश की स्वास्थ्य समस्याओं को हल करने के लिए उनका सहयोग लेता। अपने सहयोगी के सदस्यों को मैं उनकी योग्यता के अनुसार उचित जिम्मेदारी सौंपता, उस सब के प्रति मेरा व्यवहार सहानुभूतिपूर्ण तथा निष्पक्ष होता, फिर भी किसी तरह भ्रष्टाचार को बर्दाश्त न करता। स्वास्थ्य मंत्री के नाते में अपना लक्ष्य देश को हर तरह से सुखी और समृद्ध और स्वस्थ बनाने की ओर ही केंद्रित करता।

भाग्य और पुरुषार्थ

भाग्य और पुरुषार्थ। कभी लगता है भाग्य श्रेष्ठ है। कभी लगता है कि पुरुषार्थ श्रेष्ठ है। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी-अपनी धारणा होती है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता कठिन परिश्रम से ही मिलती है। अकर्मण्य व्यक्ति देश, जाति, समाज और परिवार के लिए एक भार बन जाते हैं। जो व्यक्ति दूसरों का मुँह ताकते रहते हैं, वह पराधीन हैं - दास हैं।

कुछ लोग यह समझते हैं कि 'वही होगा जो मंजूरे खुदा होगा' और अकर्मण्य बन जाते हैं। ऐसे लोग भाग्यवाद में विश्वास करते हैं और प्रयत्न से कोसों दूर रह जाते हैं। आलसी कभी सफलता नहीं पाता। केवल आलसी लोग ही हमेशा 'दैव-दैव' करते रहते हैं और कर्मशील लोग 'दैव-दैव आलसी पुकारा' कहकर उनका उपहास करते हैं।

यह संसार कर्म करने वालों की पूजा करता है। कर्मशील व्यक्ति भाग्य को अपने वश में कर लेते हैं। पर्वत भी इनके आगे शीश झुकाते हैं।

मनुष्य परिश्रम के द्वारा कठिन से कठिन कार्य सिद्ध कर सकता है। परिश्रम अर्थात् मेहनत के ही द्वारा मनुष्य अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकता है। कोई भी कार्य केवल हमारी इच्छा मात्र से ही नहीं सिद्ध होता है, उसके लिये हमें कठिन परिश्रम का सहारा लेना पड़ता है। जैसे सोए हुए शेर के मुख में पशु स्वयं ही प्रवेश नही करता उसे भी परिश्रम करना पड़ता है, वैसे ही केवल मन की इच्छा से काम सिद्ध नही होते उनके लिये परिश्रम करना पड़ता है। प्राचीन ग्रंथ, महाभारत में भी गुरू द्रोण के शिष्य अर्जुन, कठिन परिश्रम के ही द्वारा सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर बन सके। भारत देश की स्वतंत्रता भी गांधी जी और नेहरू जी जैसे महापुरुषों के परिश्रम का फल है। परिश्रम ही सफ़लता की कुंजी है।

प्र. 10. नेशनल बुक ट्रस्ट के प्रबंधक को पत्र लिखकर हिन्दी में प्रकाशित नवीनतम साहित्य की पुस्तकें भेजने हेतु अनुरोध कीजिए। 5

राम भवन

सोलापुर

दिनाँक - 15 मार्च 2015

सेवा में,

प्रबंधक

नेशनल बुक ट्रस्ट

दरियागंज

नई दिल्ली

विषय : पुस्तकें मँगवाने हेतु प्रार्थना पत्र।

महोदय,

मुझे हिन्दी में प्रकाशित इस महीने की नवीनतम पुस्तकें जल्दी ही चाहिए। मैंने पुस्तकों की अग्रिम राशि रूपए 2500 भी दिनाँक 10 मार्च को मनी आर्डर से भेज दी है। अत: आपसे निवेदन है कि मुझे जल्द-से-जल्द पुस्तकों वी.पी.पी से भेजने का प्रयास करें।

धन्यवाद।

भवदीय

सौरभ चटर्जी

प्र. 11. दिए गए चित्र का वर्णन करें : 5

उपर्युक्त चित्र वृक्षारोपण से संबंधित चित्र है। इस चित्र में हमें स्काउट और गाइड के बच्चे वृक्षारोपण करते हुए दिखाई दे रहे हैं। कुछ बच्चे पौधे रोप

रहे हैं तो कुछ बच्चे पौधों में पानी डाल रहे हैं। सभी बच्चे खुश नजर आ रहे हैं और अपने-अपने काम को लगन और तन्मयता से कर रहे हैं। भारतीय संस्कृति की परंपरा के अनुसार पेड़ को देवता मानकर उनकी पूजा की जाती है। यह हमारे जीवन का आवश्यक अंग है। वृक्ष के बिना हम भी अधिक समय तक अपने अस्तित्व को जिंदा नहीं रख सकते। वन
वातावरण में से कार्बन डाईऑक्साइड को कम करते हैं। वातावरण को शुद्ध बनाते हैं। बहुमूल्य ऑक्सीजन देते हैं। पेड़ हमें भोजन, घरों के निर्माण और फर्नीचर बनाने के लिए हमें लकड़ी प्रदान करते हैं। वे हमें ईंधन के लिए लकड़ी उपलब्ध कराते हैं। हमें विभिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियाँ देते हैं। बढ़ती आबादी, शहरीकरण के कारण हरियाली तेजी से कम हो रही है। जितनी तेज़ी से हम इनकी कटाई कर रहे हैं, उतनी तेज़ी से ही हम अपनी जड़ें भी काट रहे हैं। वृक्षों के कटाव के कारण आज भयंकर स्थिति उत्पन्न हो गई है। पेड़ों का क्रूर वध हमारे विनाश में सहायक होगा। रेगिस्तान का विस्तार होगा, नदियाँ सूख जाएगी, पानी की कमी होगी, भूमि बंजर हो जाएगी, प्रकृति का संतुलन बिगड़ जाएगा। हमारा अस्तित्व उन पर निर्भर करता है इसलिए हमें पेड़ों की रक्षा करनी होगी। पर्यावरण की समस्याओं का एकमात्र समाधान पेड़ों की सुरक्षा है। सरकार ने जनमानस को जागृत करने के लिए 1950 में वन महोत्सव कार्यक्रम आरंभ किया।
पर्यावरण को बचाने के लिए यह हमारे जागने का वक्त है। सिर्फ जागने का ही नहीं, कुछ करने का भी। इसके लिए जरूरी है कि हम पेड़ लगाएँ। विनोबा भावे ने हर व्यक्ति को एक पेड़ लगाना चाहिए यह संदेश दिया है। प्रत्येक व्यक्ति को यह समझना होगा कि वन ही जीवन है, इस वन-जीवन से हम प्यार करें और वृक्षों को लगाकर इसकी रक्षा करे।

प्र. 12. विद्यार्थी और बस कंडक्टर के बीच हो रहे संवाद लिखिए। 5

कंडक्टर : टिकिट टिकिट..

विद्यार्थी : १ अभिनव कॉलेज स्टॉप

कंडक्टर : १० रु.

विद्यार्थी : मैं तो रोज ८ रु. में जाता हूँ।

कंडक्टर : हाँ ! जाते होगे परंतु आज से भाव बढ़ गया।

विद्यार्थी : क्या बात कर रहे हैं? तीन महीने पहले ही तो ६ रु. से बढ़कर ८ रु. हुआ था।

कंडक्टर : अब हम क्या करे? महंगाई बढ़ती है और सरकार दाम बढ़ाती है।

विद्यार्थी : हाँ महंगाई बढ़ती है इसका भुगतान जनता को ही करना पड़ता है।

कंडक्टर : क्या करे?

विद्यार्थी : हमें सरकार से बार-बार टिकट के दाम बढ़ाने को लेकर शिकायत करनी चाहिए।

कंडक्टर : हमारा तो काम है यह, आप बाबू लोग देखों।

विद्यार्थी : ठीक है, हम ही कुछ करेंगे।

प्र. 13. कंप्यूटर के विज्ञापन का प्रारुप (नमूना) तैयार कीजिए : 5